

समस्या की पहचान के लिए पुरस्कार

विज्ञान के सामने सबसे बड़ी भावी चुनौती क्या है? यह सवाल ब्रिटेन की जनता के सामने रखा गया है। जनता के जवाब के आधार पर 1 करोड़ पाउंड (लगभग 10 करोड़ रुपए) का लॉन्गीट्यूड पुरस्कार किसी अनुसंधान के लिए दिया जाएगा। लॉन्गीट्यूड पुरस्कार दुनिया की सबसे महत्वपूर्ण वैज्ञानिक समस्या को सुलझाने के लिए दिया जाता है।

पुरस्कार की प्रक्रिया के तहत पहले 100 से ज़्यादा प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों ने 6 प्रमुख समस्याएं चिन्हित की हैं - खाद्यान्न, जल संकट, जलवायु परिवर्तन, सूक्ष्मजीवों में पैदा हुआ प्रतिरोध, लकवा और स्मृति-लोप। अब इस पर 22 मई से जनता वोट डालेगी जो 25 जून तक चलेगा। इसके बाद आविष्कारकों को पांच साल का समय दिया जाएगा कि वे चुनी हुई समस्या पर काम करें। जो टीम सर्वश्रेष्ठ हल सुझाएगी उसे 1 करोड़ पाउंड का पुरस्कार दिया जाएगा।

यह पुरस्कार पिछले वर्ष जून में यूके के प्रधान मंत्री डेविड कैमरून ने घोषित किया था। यह ब्रिटिश सरकार द्वारा 1714 में पारित लॉन्गीट्यूड (देशांतर) कानून की 300 वीं जयंति के उपलक्ष्य में घोषित किया गया है। दरअसल, यह वह समय था जब जहाज़ी दूर-दूर की समुद्र यात्राएं कर रहे थे, नई-नई जगहें खोज रहे थे। नौवहन की एक बड़ी समस्या थी कि समुद्र में आप आसानी से रास्ता भटक सकते हैं। रास्ता जानने के लिए यह जानना ज़रूरी था कि आप किसी क्षण कहां हैं। यह काम देशांतर रेखा की



मदद से किया जाता था मगर दिक्कत यह थी कि आपका जहाज़ जहां खड़ा है, वहां की देशांतर रेखा पता कैसे चले। इस समस्या को सुलझाने के लिए 20,000 पाउंड का पुरस्कार रखा गया था।

यॉर्कशायर के एक घड़ीसाज़ जॉन हैरिसन ने एक पोर्टेबल टाइमपीस (जिसे वे क्रोनोमीटर कहते थे) बनाया था जिसकी मदद से आप किसी भी स्थान पर तारों की गति को देखकर सही-सही देशांतर का पता लगा सकते थे। गौरतलब है कि देशांतर रेखाएं यानी लॉन्गीट्यूड पृथ्वी पर उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव तक खिंची काल्पनिक रेखाएं हैं जो पूर्व-पश्चिम स्थिति का भान कराती हैं।

जिन 6 समस्याओं के बीच से चुनाव करना है वे जानी-पहचानी हैं और सब एक-से-एक महत्वपूर्ण हैं। जितनी महत्वपूर्ण समस्याएं हैं, उतने ही नवाचारी समाधान की वे मांग करती हैं। जैसे जलवायु परिवर्तन की श्रेणी में लक्ष्य एक ऐसा हवाई जहाज़ बनाने का रखा गया है जो कार्बन उत्सर्जन किए बगैर वर्तमान विमानों की रफ्तार से उड़ सके। इसी प्रकार से जल संकट के तहत शोधकर्ताओं से मांग की जाएगी कि वे पेयजल व खेती में उपयोग के लिए समुद्री पानी को लवण मुक्त करने का सस्ता तथा पर्यावरण की दृष्टि से अनुकूल संयंत्र बनाएं। प्रतिरोधी बैक्टीरिया के मामले में करना यह होगा कि एक ऐसा टेस्ट विकसित किया जाए जो चिकित्सक को बता सके कि कब एंटीबायोटिक औषधि देना है और कब नहीं। (स्रोत फीचर्स)